(1) 24 पृष्ठीय

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
Hindi (General)	0 5 1	English

MADHYAPRADESH BOARD OF SECONDARY EDUCATION BHOPAL

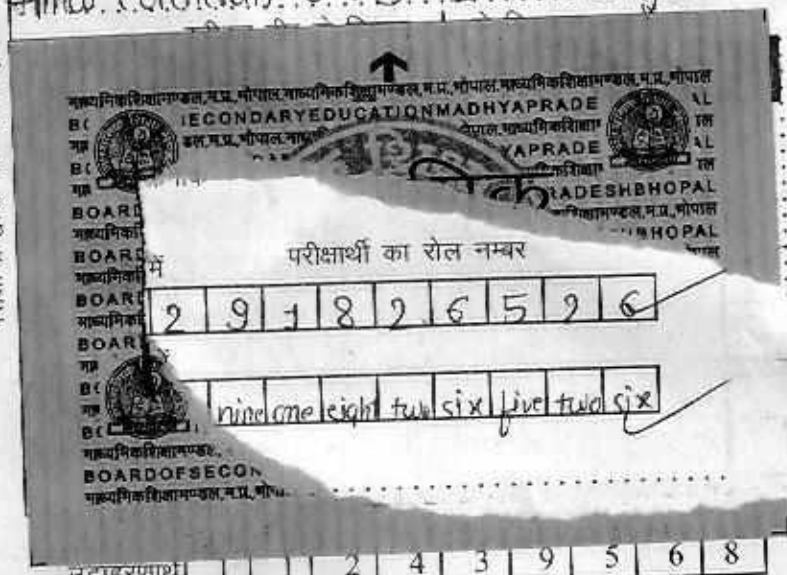

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

2	9	1	8	2	6	5	2	6
two	nine	one	eight	two	six	five	two	six

उदाहरणार्थ

1	1	2	4	3	9	5	6	8
एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पांच	छः	आठ

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

क :– पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में [ ] शब्दों में [ ]

ख :– परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 11

ग :– परीक्षा का दिनांक 09 03 2019

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हायर सेकेण्डरी परीक्षा केन्द्र क्रमांक 182001

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
श्रीमती रंजना कौरव P.S बामोरकर्ली	

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्रापट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है। निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा ... निर्धारित मुद्रा

G. S. PATIDAR ... Govt. EX. H.S.S. ...

O. P. ... (V.A.) ... Nalkheda Govt. ... Mo.No. 9993671331

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे। प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक
1	
2	
3	
4	
5	
6	
7	
8	
9	
10	
11	
12	
13	
14	
15	
16	
17	
18	
19	
20	
21	
22	
23	
24	
25	
26	
27	
28	

(2) [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 2 के अंक | कुल

मध्यप्रदेश

SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० 01

1. ब्रज ।

2. 1888 ।

रहीम ।

4. नवीनतम ।

5. मॉन्टेन ।

प्रश्न क्र० 02

1. दृढ़ता से जम जाना ।

2. कारक सम्बन्धी ।

एकांकी ।

आठ (8) ।

5. भूषण ।

B
S
E

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० 03

1. सत्य ।
2. असत्य ।
3. सत्य ।
4. सत्य ।
5. सत्य ।

प्रश्न क्र० 04

1. हिमालय और हम - गोपाल सिंह 'नेपाली'
2. मेरे सपनों का भारत - निबंध
3. आँचलिक कथाकार - फणीश्वर नाथ रेणु
4. हाथ कंगन को आरसी क्या - लोकोक्ति
5. बल - बहादुरी - कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर

4 [ ] + [ ] = [ ]

पृष्ठ पृष्ठ अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० 05

1. संवेदनाहरक — Anaesthesia
2. कनकलता — कनक के समान लता
3. आँचलिक।
4. विरह की वेदना।
5. राष्ट्रीय नव जागरण का।

प्रश्न क्र० 06 (ii)

उ०- 'ठेस' की कहानी में सिरचन कई वस्तुएँ बनाना जानता था। जैसी मोथीघास और पटेर की सुंदर रंगीन शीतलपाटी, बाँस की तीलियों की झिलमिलाती चिक, मूँज की रस्सी के बड़े बड़े जालें, नाल के पत्तों के जूते - आदि बनाना जानता है।

प्रश्न क्र० 07 (i)

उ०- लघु कथा - 'शब्द और अनुभूति' में टैगोर जी सौन्दर्य शास्त्र की पुस्तक पढ़ रहे थे। पढ़ते - पढ़ते

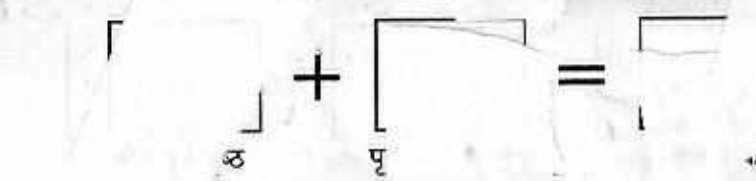

प्रश्न क्र. उनके दिमाग में ख्याल आया सौन्दर्य क्या है? क्या हम इसे देख देख सकते थे हैं? क्या हम इसे अनुभव कर सकते हैं? यह जानने के लिए गुरुदेव इच्छुक थे।

प्रश्न क्र० 08 (i)

उ०- द्विवेदी युग का काल ~~प्रारंभ~~ से 1900 से 1920 तक था। इस युग के प्रमुख निबंधकार महावीर प्रसाद द्विवेदी थे।

विशेषताएँ :- 1. इस युग में अनेक शिल्प-गत शैली शैलियों का विकास हुआ।
2. द्विवेदी युग में ज्ञान-विज्ञान से संबंधित उच्च स्तरीय निबंध लिखे गए।

प्रश्न क्र० - 09 (ii)

उ०- शुक्लोत्तर युग के निबंधकार :-

निबंधकार	निबंध
~~सेन्दु~~ हरिश्चन्द्र	कल्पलता
डॉ० नोलन	आस्था के चरण

BSE

6 [ ] + [ ] = [ ]

पृष्ठ 6

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० 10 (ii)

संक्षेपण : किसी विस्तृत लिखित सामग्री में से अनावश्यक, अनीति, असम्बद्ध बातों को निकालकर उसके मूल तत्व या उद्देश्य का स्पष्ट, सम्बद्ध रूप में प्रतिपादन करना संक्षेपण या संक्षिप्तीकरण कहलाता है।

विशेषता : संक्षेपण में " गागर में सागर ~~भरन~~ भरने " की विशेषता समाहित होती है।

B
S
E

प्रश्न क्र० 11 (i)

अनेकार्थी शब्द : ऐसा शब्द जिसके प्रायः एक से अधिक अर्थ निकाले जा सकते हैं, अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं।

उदा०- मनका - मन की बात
माला का दाना

प्रश्न क्र० 12 (ii)

(1) मुझे घर जाना है।

(2) अमिताभ की ऊँचाई जया की ऊँचाई से अधिक है।

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० 13 (ii)

पारिभाषिक शब्द :-

(1) अधि + सूचना - अधिसूचना

(2) उप + यंत्री - उपयंत्री

(3) सं + प्रेषण - संप्रेषण

(4) ना + बालिग - नाबालिग

प्रश्न क्र० 14 (ii)

(1) राजेश आस्तिक है।

उ० - राजेश ~~आस्तिक~~ है।

(2) बालक रो-रो कर चुप हो गया।

उ० - बालक रोता रहा और चुप हो गया।

प्रश्न क्र० 15 (ii)

(1) गले का हार :- अत्यधिक प्रिय

प्रयोग :- माँ के लिए उसकी संतान उसके गले का हार होती है।

B S E

प्रश्न क्र. (2) बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद : मूर्ख व्यक्ति उत्तम वस्तु का गुण नहीं समझता।

प्रयोग : मूर्ख व्यक्ति को धन मिलने पर यह कहावत लागू होती है कि बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद।

प्रश्न क्र० - 16 (ii)

उ०- 'मन की एकाग्रता' नामक पाठ के रचयिता 'पं बालकृष्ण भारद्वाज' ने गीता ०

उ०- 'हम कहाँ जा रहे हैं' कविता में कवि 'सुदर्शन प्रियदर्शिनी' राष्ट्र की के नव युवकों को सचेत करते हुए कहते हैं कि - आज के युग में हम झूठी दुंदभी बजा रहे हैं अर्थात आज संस्कृति भाषा-ज्ञान, विधि-विधि विधान से युक्त भारत देश के वासी अपनी संस्कृति को भुलाकर पाश्चात्य जीवन & शैली में रंगते जा रहे हैं। वे अपनी गौरवमयी बातों को विदेशियों से जानने के लालायित हैं। अपने & स्वाभिमान को भूलकर उनका गुण गान करने में लगे हुए हैं। अतः हमें अपनी संस्कृति को जानने और सुरक्षित रखने की आवश्यकता है।

MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० 17 (ii)

उ०- 'जागो फिर एक बार' नाम पाठ मे कवि श्री 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' जी ने राष्ट्रीय नवयुवकों को प्रकृति के कई व्यवहारो से उन्हे जाग्रत करने का प्रयास किया है। वे कहते है कि - जब सिंहनी से उसका बच्चा छीनने का कोई प्रयन्त प्रयत्न करता है तो वह शांत नही बैठती। अपने बच्चो को ले जाने वाले को नष्ट कर देती है। जहाँ मेषमाता (बकरी) अपने बच्चे को ले जाने वाले के सामने लगत आँसू बहाती रह जाती है। अत: कवि ने जाग्रत करा है कि "सबल का जीवन जीना चाहिए, दुर्बल का नहीं।"

प्रश्न क्र० 18 (ii)

उ०- 'सुदर्शन प्रियदर्शनी', ने 'हम कहाँ जा रहे हैं', में भारतवासियों के दोगले व्यवहार को गलत मानते हुए उन्हें अपना स्वाभिमान को बचाकर रखने का संदेश दिया है। वे कहते हैं कि - भारतवासियों ने अपना भाषा-ज्ञान, वेश-भूषा सब विदेशीयो को सौंप दिया है। हमारे ही वस्तुकला, तत्वज्ञान, योग अपना कहकर हमें ही परोस रहे। वे विदेशियों के इस व्यवहार को उचित

प्रश्न क्र.

करने के लिए 'उल्टे बाँस बरेली को' मुहावरे का प्रयोग किया है।

प्रश्न क्र० 19 (ii)

उ०- 'कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' ने निबंध 'बल - बहादुरी' में बल तथा बुद्धि के समन्वय को अपने का प्रयास किया है। पश्चिम 'शरीरबल' का उपासक होता है जबकि भारत 'आत्मबल' का। उनके अनुसार दोनों ही बल अपने समय में बहुत फले - फूले और अपनी सीमा में पहुँचे पहुँचे। व्यक्ति को दोनों ही बल का साथ मे प्रयोग करना चाहिए। परंतु सबसे महत्त्वपूर्ण आत्मबल है जिससे शरीरबल पर भी जीत हासिल की जा सकती है।

B

प्रश्न क्र० 20 (ii)

उ०- 'सुभद्रा कुमारी चौहान' ने अपनी कविता 'तीन बच्चे' में तीन बच्चों की दुर्दशा का बताया है कि घर टूट जाने पर उनकी क्या हालत होती है। तीनों बच्चे 'इंठी', 'सीठी' और 'प्रेमा' की अत्यंत ही दयनीय दयनीय हालत थी। वे

प्रश्न क्र. भूख से व्याकुल थे। उनके शरीर पर वस्त्रों की जगह फटे - पुराने चिर थे। कई दिनों से न नहाने के कारण शरीर पर मैल की परत जमी हुई थी। सबसे छोटा लड़का 'प्रेमा' लगभग 8 'पाँच' वर्ष का था जिसके चेहरे पर आँसुओं की के निशान थे। उसकी हालत देखकर लेखिका के आँखों में आँसु झलक उठे।

प्रश्न क्र० 21 (1)

उ० - 'आचार्य विनय मोहन शर्मा' ने अपनी यात्रावृतांत 'दक्षिण भारत की एक झलक' में दक्षिण भारत का बड़ा ही मनोहारी चित्रण किया है। उन्होंने कहा था कि -

चेन्नई (मद्रास) में हिन्दी प्रचार सभा दक्षिण में हिन्दी के 'विद्यापीठ' को स्थापित करने का प्रयास कर रही है। अनेक अध्यापक अध्यापिकाएँ हिन्दी की शिक्षा ग्रहण करके दक्षिण के विभिन्न प्रांतो के विद्यालयों, महाविद्यालयों कालेजों में जाकर शिक्षा दे रहे हैं। हिन्दी प्रचार सभा दक्षिण भारत में हिन्दी के प्रसा प्रचार - प्रसार का एक सस सराहनीय कार्य कर रहे हैं।

(12) [ ] + [ ] = [ ]

पृष्ठ   पृष्ठ 12 के अंक

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० 11 (i)

उ० - राष्ट्रकवि 'भूषण' ने अपनी कविता 'शौर्य गाथा' में वीर योद्धा शिवाजी और वीर छत्रसाल के जीवन के विशेष युद्धों का वर्णन किया है।

'शिवा शौर्य' में शिवाजी का युद्ध के समय का बड़ा ही मनोहारी चित्रण किया है। शिवाजी अपनी चतुरंगी सेना - रथ सेना, घोड़े, पैदल और हाथियों की सेना के साथ अस्त्र शस्त्र से परिपूर्ण होकर युद्ध करने के लिए निकल जाते हैं। युद्ध के परिचायक सेना के 'प्रस्थान' के समय बड़े जोरों से 'नगाड़े' बजाते हैं। मदमस्त हाथी और मतवाले हो जाते हैं। शिवाजी की सेना युद्ध भूमि मे चारों ओर फैल जाती है। हाथियों के दौड़ने दौड़ने से उड़ती धूल के कारण सूरज भी चंद्रमा के समान प्रतीत होने लगता है। हाथियों के चलने से पहाड़ उखड़ जाते है। समुद्र भी थाली में रखे पारे के समान हिलता हुआ प्रतीत होता है।

अतः भूषण जी ने शिवाजी के सेना के युद्ध का वर्णन बहुत सुंदर ~~तरीके~~ कृत्रिम रूप से किया है।

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 23 (i)

उ०- 'बाबू गुलाबराय' ने अपने निज ललित शैली में लिखा गया निबंध 'नर से नारायण', में पानी के कारण होने वाली समस्यों का वर्णन किया है।

बिजली गुल हो जाने के कारण चारो ओर ~~धुत्य~~ अँधेरा छा जाता है। कमरे के सारी वस्तुएँ ओझल हो जाती है। कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता है। प्रकाश के लिए लालटेन ढूंढना भी मुश्किल था। मैं टॉर्च ढूंढने के लिए भी प्रकाश का जुलाना असंभव था। किसी प्रकार दीपक लालटेन मिली किन्तु उसमे तेल नहीं था। किसी तरह दीपक का प्रबंध किया परंतु वह भी तेज हवा के झोके से बुझ गया। कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। एक हाथ को से दूसरे हाथ का पता लगाना भी मुश्किल था। इस तरह की कठिनाईयों का सामना लेखक को करना पड़ा।

अतः तमतोम छा जाने के कारण लेखक तथा उसके परिवार को अत्यंत दुःखी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा।

SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० 24 (i)

"संदेसौ देवकी — — — — — रोती भावै।"

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'मकरंद' के "सूर के बालकृष्ण" नामक पाठ से अवतरित की गयी हैं जिसके रचयिता वात्सल्य कवि "सूरदास" हैं।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियों में माँ यशोदा अपने को कृष्ण की धाय कहते हुए देवकी को कृष्ण की आदतों का ध्यान रखने के लिए पत्र भेजती हैं।

B
S
E

व्याख्या : प्रस्तुत पंक्तियों में सूरदास ने माँ यशोदा की चिंता का व्यक्त किया है। यशोदा देवकी से कहती हैं कि - मैं तो तुम्हारे बालक की पालन-पोषण करने वाली धाय हूँ, तुम उसकी माँ हो अर्थात सब कुछ जानती होगी परंतु कहने में मुझे आ ही जाता है कि तुम उन पर सदैव दयालुता और प्रेम भरा व्यवहार करना। प्रात: काल कृष्ण को माखन रोटी खाना अच्छा लगता है। अत: तुम उनकी रुचियों और आदतों को ध्यान रखना और कठोरता पूर्ण व्यवहार कतई मत करना।

प्रश्न क्र.

विशेष : (1) पद में लयात्मकता है।
(2) काव्य में सौन्दर्य है।
(3) ब्रज भाषा का प्रयोग है।

प्रश्न क्र. 25

"गद्यांश"

30-1- शीर्षक - "मेरे सपनों का भारत"

30-2- सारांश - मेरे सपनों का भारत, निबंध में लेखक कहते हैं कि मेरे भारत के सभी लोगों में समानता तथा प्रेम भाव होगा। दुश्मनों से भयभीत न होकर सभी सुख व शांति से जीवन यापन करेंगे। भारतीय संस्कृति, भाषा को सर्वोपरि रखते हुए आने वाले दुश्मनों को सफाया कर दूंगा।

30-3- मेरे सपनों के भारत में सभी भारतवासियों के साथ समानता के व्यवहार की अपेक्षा की गई है जिसमें सभी सुख शांति और खुशी को जीवन यापन करें।

30-4- ~~उन्नति~~ - प्रगति।

30-5- ईंट से ईंट बजा देना - करारा जवाब देना।

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० 26

"पद्यांश"

"हम अनेकता ---------- साथियो।"

30-1- शीर्षक - "देश की अनेकता में एकता।"

30-2- सारांश - "हमारा देश में विभिन्न जातियाँ हैं परंतु सभी एक हैं। सभी अपने देश को ऊंचाईयो पर ले जाने के लिए साथ में काम करते हैं। यदि देश के युवक ही टूट जाएँगे तो देश से मैला व्यवहार निकलना असंभव है। अतः सभी को अपने श्रम, परिश्रम से देश को उन्नति का मार्ग दिखाना होगा।"

30-3- मनुष्य जब अपने निज स्वार्थ के लिए कार्य करता है, संस्कृति को नहीं अपनाता है तब उसके विचार मैले तथा गंदे हो जाते हैं। जिसके कारण देश का पतन होता जा रहा है।

30-4- (विलोम) आस्था - अनास्था।

30-5- हम मिलजुलकर कठिन से कठिन रास्तो को चलने योग्य बना सकते हैं। जिसके लिए परमावश्यक एकता है।

BSE

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० 27 (i)

"आवेदन - पत्र"

सेवा में,

सीमान प्राचार्य महोदय,
शा० मॉडल स्कूल
चन्देरी जिला अशोकनगर (म० प्र०)।

विषय : बुक बैंक से पुस्तक प्राप्त करने हेतु आवेदन पत्र।

महोदय,

मैं आपके विद्यालय की कक्षा 12 वीं की नियमित छात्रा हूँ। मेरे पिताजी एक तृतीय श्रेणी कर्मचारी हैं। मेरे घर में आठ सदस्य हैं जिनका लालन - पोषण भी ठीक प्रकार से नहीं हो पा रहा है। मेरे पिताजी की मासिक आय बहुत कम है। जिसके कारण मैं बाजार से पुस्तकें खरीदने में असमर्थ हूँ। मैंने पिछली परीक्षा में प्रथम कक्षा में प्रथम आई थी। अतः मैं आपसे वादा करती हूँ कि मैं आगे भी ऐसे ही अध्ययन करूँगी।

अतः आपसे नम्र अनुरोध है कि आप मुझे विद्यालय के बुक - बैंक से पुस्तक उपलब्ध कराने की कृपा करें।

धन्यवाद

भवदीया

दिनांक - 09-03-19

कक्षा - 12 वीं

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र० 28 (ब)

निबंध :- "विज्ञान और मानव"

'रूपरेखा'

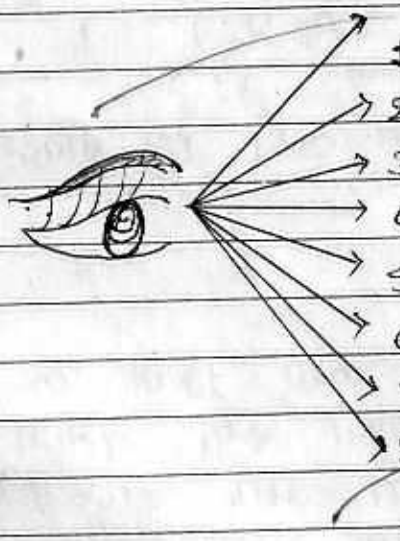

1. प्रस्तावना
2. वैज्ञानिक अविष्कार
3. विज्ञान - 'एक वरदान'
4. स्वास्थ्य एवं चिकित्सा
5. सूचना क्रांति
6. शिक्षा एवं मनोरंजन
7. विज्ञान - 'एक अभिशाप'
8. उपसंहार

"सावधान मनुष्य को,
विज्ञान का उपहार।
है सुवासित प्रगति सुख से,
चतुर्दिक संसार ॥"

BSE

प्रश्न क्र.

खण्ड - 'अ'

निबंध - राष्ट्र निर्माण में युवकों का योगदान

रूपरेखा

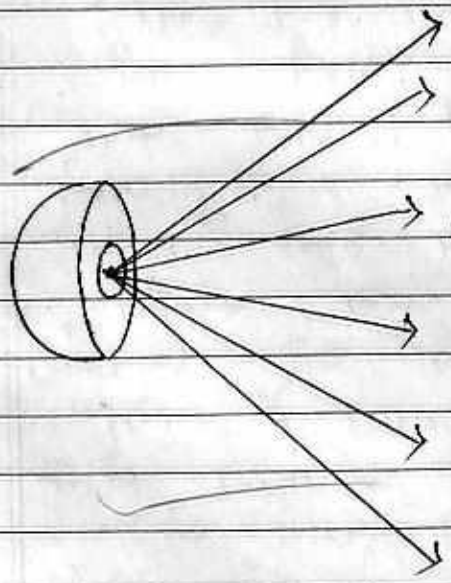

1. प्रस्तावना
2. युवा राष्ट्र का भविष्य
3. राष्ट्र निर्माण के बहुआयाम
4. युवकों का योगदान
5. शुभपरिणाम
6. उपसंहार

"युवा ही है जो प्रगति के पथ पर राष्ट्र को ले जाने वाला है।"

BSE

प्रश्न क्र.

1. प्रस्तावना : मानव जाति की विभिन्न अवस्थाओं में सबसे महत्वपूर्ण अवस्था युवा अवस्था है। इस अवस्थता में ताजे रक्त का संचार होता है। युवा शक्तिशाली, बलवान तथा निडर होता है। इसी अवस्था में ज्ञान प्राप्त करने की तीव्र लालसा होती है। ज्ञान प्राप्त करके युवा का चिंतन - मनन करने की क्षमता का विकास होता है। इस समय युवा विज्ञान, संगीत, नृत्य, वाद-विवाद आदि की जानकारी प्राप्त करता है। यही कारण है कि वह देश के विकास का आकांक्षी होता है। यही कारण से युवा समय के प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करता है। कहा है -

"कर्म रत जग में, हर दिशा से, कर्म की आवाज आती है,
काल की गति एक क्षण को भी विराम नहीं पाती है।"

2. युवा राष्ट्र का भविष्य : आज का प्रत्येक नव युवक देश का आगामी राष्ट्रनायक होगा। उसके कंधों पर ही राष्ट्र का विकास और उसके कल्याण का

प्रश्न क्र.

पूरा भार होता है। एवं इसके लिए परमावश्यक परमावश्यक है कि युवा में कर्मठता, कर्तव्य, चरित्र का विकास हो। बौद्धिक विकास के विद्यालयों में उसी प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए क्योंकि "शिक्षा काल में निर्मित विद्यार्थी ही एक कुशल नागरिक बनेगा।" अतः देश वही सम्पन्न होगा जिसका युवा वर्ग परिश्रमी होगा।

3. राष्ट्रनिर्माण के बहुआयाम : राष्ट्र के निर्माण के लिए शिक्षा, विज्ञान, चिकित्सा, प्रशासन, खेती, उद्योग आदि कई आयाम होते हैं। जिसमें युवा अपना सक्रिय योगदान करता है। जो जिस क्षेत्र में कार्य कर रहा हो, उसी क्षेत्र में देश को उन्नति का मार्ग दिखाए। सभी को अपने - अपने तरीके से राष्ट्र निर्माण के आकांक्षी होते हैं। इसलिए इसके लिए किसी युवा के मन में जाति, भेद-भाव का विचार नहीं आना चाहिए। यह बात हमेशा ध्यान में रखना चाहिए कि -

"चाहे जो हो धर्म तुम्हारा
चाहे जो वादी हो।
अगर नहीं जी रहे देश के लिए
तो अपराधी हो।"

प्रश्न क्र.

4. युवकों का योगदान : आज भारत के नव युवक ही हैं जो भारत देश आसमान की ऊँचाईयों पर पहुँचाने वाले हैं। प्राचीन काल में भी कई ऐसे वैज्ञानिक, दार्शनिक, संत आदि हुए हैं जिन्होंने देश के लिए अपनी जी-जान लगा दी थी। आज हर एक युवा को अपने आदर्श महानयुवकों से प्रेरित होकर व राष्ट्र के हित में कार्य करने की आवश्यकता है। वैज्ञानिक नई-नई खोजें करके, व्यापारी नए-नए उद्योगों से, किसान अच्छी खेती करके, नेता कुशल नेतृत्व करके देश के हित में अपना सक्रिय योगदान कर सकता है। आज एन-सी-सी जैसे अनेक कार्यालयों का आरंभ हुआ है जिससे नव युवक राष्ट्र के बाढ़ पीड़ितों, सूखाग्रस्तों, रोगियों की मदद करता है।

5. शुभ परिणाम : आज भारत भी विश्व की अनेक शक्तियों में सम्मिलित हो गया है। भारत ने वर्षों की परतंत्रता के बाद विकास के मार्ग पर चलना सीखा है। अतः हमें अपने कुशल एवं सक्रिय योगदान करके राष्ट्र के विकास में बाधा नहीं बल्कि उसे अग्रसर करना

BSE

प्रश्न क्र.

है। जिस राष्ट्र के युवा जितने अधिक सेवाभावी होंगे, राष्ट्र उतनी ही अधिक प्रगति के पथ पर अग्रसर होगा। जिस देश में रहकर उसका अन्न, जल, आदि का भोग किया है उस देश के मर मिटना तो एक छोटी सी बात है। अर्थात युवा के मन यह बात हमेशा रहनी चाहिए कि -

"क्या हुआ अगर मर गए अपने वतन के वास्ते,
बुल-बुले भी तो मरते हैं अपनी चमन के वास्ते।"

6. उपसंहार : आज का युग अर्थ प्रधान होता जा रहा है। युवा अपनी आवश्यकता के अनुरूप ही कार्य करता है। सभी धन की ओर खींचे चले जा रहे हैं। अतः प्रत्येक नवयुवक का यह होना चाहिए कि अपने राष्ट्र हित के लिए कार्य करे। और के धन की जगह मानवीय गुणों भरने का प्रयास करे। इसके लिए युवा वर्ग का समूह बनाकर जन-जन के कल्याण के लिए साथ मिलकर प्रयास करना होगा तभी राष्ट्र का विकास सम्भव होगा।

समाप्त.....